कप्तान जोली की मूर्ति उस समय देखनेही योग्य थी। जब वह अपने बलिष्ट और मोटे २ हाथों से डाड़ों को खे रहे थे तो उनका मोटा चेहरा सिंदूर से रङ्गा हुआ जान पड़ता था।

इस भागाभाग के एक घण्टा उपरान्त, उन ६ डोंगों में से पाँच डेंगे अब केवल एकही माइल के अन्तर पर रह गये। आने वाले, भागनेवालों की अपेक्षा बहुत शीघ्रता से बढ़ रहे थे। उन पाँचों डोंगों पर बारह मनुष्य सवार थे जिनमें आधे तो अरब थे और आधे बुदमा; इन अरबों के हाथ में बन्दूकें भी थीं जिन्हें उन्होंने भरकर और डेंगे को तेज करके इन भागनेवालों पर दागी परन्तु गोलियां इनसे कुछ दूर पर जा गिरी!

सर विल्फ्रेड—कुछ परवाह नहीं! बढ़े चलो!

यह कहकर उन्होंने अपनी तथा अपने साथियों की बन्दूकें भर लीं और उनको आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये उन लोगों के पास रख दीं क्योंकि बैरियों के डोंगे बड़ीही शीघ्रता से झपटे चले आ रहे थे!

सोलहवां बयान।

वह लोग यह अनुमान नहीं कर सक्ते थे कि उनके पीछा करनेवाले उनसे कितनी दूर है क्योंकि सर विल्फ्रेड ने किसी को इधर उधर देखने के लिये मना कर दिया था। उधर वे जङ्गली इस विजय से जिस्की कि उन्हें पूरी आशा थी, बड़ेही प्रसन्न हो रहे थे।

सर विल्फ्रेड ने जब देखा कि अब वह सब केवल चालीस गज़ के अन्तर पर पहुँच गये तो अपनी बन्दूक उठाई और निशाना ताक कर जो दाग़ी तो एक बड़ा अरब जो डोंगें में सबके आके खड़ा था चिल्लाता हुआ डेंगे में गिर पड़ा । इस्से उन लोगों की चाल में कुछ फर्क आ गया, और जब दूसरे व्यक्ति उस ज़ख्मी अरब को सँभाल रहे थे तो उनमें से दो चार ने अपनी बन्दूक उठाई, इधर सर विल्फ्रेड ने यह देखकर अपने साथियों से कहा " मत घबड़ाओ ठीक पूर्व दिशा की ओर खेते चले जाओ डेंगे को तिर्छा मत होने दो ! " यह कहकर उन्होंने फिर बन्दूक दाग़ी । जिस्से कि वे बहशी अरबों सहित चिल्ला उठे परन्तु इस्के उपरान्तही उन लोगों ने भी बाढ़ भारी । तीन गोलियाँ तो ईश्वर की कृपा से इधर उधर निकल गईं परन्तु एक कप्तान जोली के हाथ में आ लगी और बड़े खेद का विषय है कि वह इस्के लगतेही चिल्लाकर उछल पड़े और वहाँ से जो नीचे आए तो पानी के भितर जा पड़े । और जबसे उनके साथी डेंगे को रोके २ तब से तो वह लगातार कई गोते खा गये । उनका स्थूल शरीर पानी के बहुतही भीतर चला गया । वह दोनों डोंगों के बीच में पड़े हाथ पैर मार रहे थे कि उनसे दस फीट पर एक सर्राटा सुनाई दिया और साथही एक लम्बा घड़ियाल उनपर झपटता दिखलाई पड़ा । जोली के तो प्राण पखेरू यह देखकेही हवा

हो गये उस बेबसी में और क्या कहते ज़ोर से चिल्ला उठे "सर विल्फ्रेड मुझे बचाओ"।

वास्तव में उनका प्राण इस समय बहुतही आपत्तियों में फँसा था। यद्यपि उन्हें तैरना आता था परन्तु इस समय वे चौंधिया गये थे। उनका हाथ भी थोड़ा बहुत बेकाम था और उनकी जेबें जो छोटे गोलियों से भरी हुई थीं और भी उन्हें बोझल बनाये हुये थीं।

उनके बैरी अब उनके सिरही पर पहुँचा चाहते थे, उधर घड़ियाल से भी कुछ विशेष अन्तर न रह गया था। सर विल्फ्रेड ने कप्तान जोली के गिरती समय कितनीही चेष्टा की कि डोंगा खड़ा हो जाय परन्तु निरर्थक! डोंगा न खड़ा हुआ! यहाँ लों कि वह अभागा कप्तान, अपने बैरी तथा मित्र दोनोंही से बराबर के अन्तर पर रह गया। इस घटना ने मित्र और बैरी दोनों को एकही प्रकार अपनी ओर झुका लिया था वे एक टक लगाये उस मनुष्य को जल के साथ बल की परीक्षा करते देख रहे थे।

इतने में सर विल्फ्रेड गरज उठे! "पीछे हटो! डोंगे को घुमा दो और ऐसा ज़ोर लगाओ कि जैसा कभी न किया हो" इस समय उन्हें कप्तान जोली को छुटकारा दिलाने के सिवा और कुछ न सूझता था। उधर कप्तान जोली अबलों चीखते चिल्लाते और हाथ पाँव मारते जाते थे साथही उस आते हुये घड़ियाल की ओर भी बेतरह पानी उछाल रहे थे जिस्से उस घड़ियाल

की चाल में कुछ फ़र्क आ गया था। इतने में सर विल्फ्रेड वहाँ पहुँच गये और जब घड़ियाल कप्तान जोली से केवल तीन फीट के अन्तर पर रहा तो उन्होंने ताक कर अपनी बन्दूक से निशाना लगाया।

इस निशाने में ईश्वर की अवश्य कोई सहायता थी वह गोली घड़ियाल की आँख को चीरती हुई भीतर चली गई, और वह भयानक जन्तु अपने रक्त में नहा कर गरजने लगा। सर विल्फ्रेड—(चिल्लाकर) कप्तान जोली! मत घबड़ाना! हम पहुँच गये।

इतने में हेक्टर ने चिल्लाकर कहा "सर विल्फ्रेड देखिये घड़ियाल में अभी प्राण हैं शीघ्र दूसरी गोली मारिये"।

सर विल्फ्रेड ने अब जो कुछ देखा उस्से वे निराश हो गये अर्थात् वह घड़ियाल यद्यपि मृत्यु के निकट था तथापि उस अभागे को अपने भयानक पञ्जों में पकड़ाही चाहता था और यह लोग उस्से केवल दस फीट के अन्तर पर उस समय थे।

सर विल्फ्रेड अब कुछ नहीं कर सक्ते थे जब तक वह अपनी बन्दूक भरें २ तबसे तो वह घड़ियाल कप्तान साहब को अपने चंगुल में ले लेगा। सबको उनकी मृत्यु का विश्वास हो गया और सब तस्वीर की तरह खड़े थे कि इतने में चेको ने जो सर विल्फ्रेड के पैर के पास बैठा था उठकर और एक मिठाई के छोटे सन्दूक को जो उन्हें बड़ाही प्रिय था और जिसे उक्त कप्तान साहब ने नाव के एक कोने में बड़ेही

हिफाजत से रख छोड़ा था अपने दाहिने हाथ में लेकर एक चीख़ के साथही साथ उस घड़ियाल के मुहं की तरफ फेंका।

भाग्यवश जैसा सोचा था वैसाही हुआ वह सन्दूक घड़ियाल के खुले हुये मुंह में जा पड़ा और अब वह कप्तान साहब को अपने मुंह में नहीं दबा सक्ता था।

मृत्यु के निकट पहुँचा हुआ जन्तु अब पाहिले से भी कुछ विशेष क्रोधित हुआ और उसने अपने लम्बे शरीर से जल में हलचल डाल दिया। उन लहरों ने कप्तान साहब को अलग फेंक दिया और सर विल्फ्रेड ने तुरन्त उनके निकट पहुच कर उन्हें डोंगे में खींच लिया।

अभी वह भली भाँति डोंगे में चढ़े भी न होंगे कि सहसा रक्त की गन्ध पाकर बहुत से घड़ियाल और मगर पानी पर जा पहुँचे और अपने घायल साथी को खा गये।

उन लोगों को अपने मित्र की जान बचाने पर कितनी प्रसन्नता हुई होगी ? उस्को आप स्वयंही अनुमान कर देखिये।

परन्तु अब सर विल्फ्रेड की आँख खुली और वे समझ गये कि हमने कितना बड़ा धोखा खाया। जिस समय यह लोग अपने मित्र की प्राणरक्षा कर रहे थे उस समय बैरीलोग उनके निकट होते जाते थे। अब वह लोग इनसे तीस फीट के फासले पर थे और पाँच बन्दूकें तथा बहुत से बर्छे इनकी ओर सीधे थे।

सर विल्फ्रेड की बन्दूक कुछ दूर पर रक्खी थी यदि इसे लेने के लिये वे उठें तो अपने प्राण से हाथ धोयें उधर वह अरब इन्हें ताके हुये धीरे २ इनकी ओर बढ़ रहे थे।

इस समय सर विल्फ्रेड की विचित्र अवस्था थी, वे निराश हो गये। अरबों की यह इच्छा थी कि इन्हें जीवित धर लें और फिर बड़ेही कष्ट से बध करें। इन लोगों को सिवाय अपने को उनके हाथ में दे देने के और तदबीरही क्या थी, वह सोच रहे थे कि आह! यदि एक बाढ़ भी इस समय हम मार सक्ते तो कितना अच्छा था।

इतने में एक ईश्वरी सहायता इन लोगों को पहुँची अर्थात् वह बुद्मा जो सर विल्फ्रेड की बन्दुक से घायल हुआ था और नाव में पड़ा चिल्ला रहा था, उछल कर पानी में गिर पड़ा और जब लों उस्के साथी उसे रोकें २ तब से तो वह पानी पीकर कई गोते खा गया।

उस्के जल में गिरने और घड़ियालों के उस्की ओर झपटने से पानी में हलचल पड़ गई और अब उनमें से कोई हिचकिचाता भी न था। उन के एक साथी का रक्त उनके मुँह लग चुका था इस लिये वे बेधड़क उस बुद्मा पर आ टूटे उसे तो टुकड़े २ कर खा गये और आपस में झगड़ने लगे।

इसी समय एक ऐसी विचित्र घटना सङ्घटित हुई कि जिसे देखकर सबके रोंये खड़े हो गये और सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि किसी को घटना का मुख्य कारण न जान पड़ा। जब वे घड़ियाल लड़ रहे थे और जल में एक हुल्लड़ मचा था तो उसी समय एक डोंगा अपने बैठनेवालों सहित पानी पर उलट गया और पलक झपकते सब गोता खाते दिखलाई पड़े।

इस्के उपरान्त जो कुछ हुआ इस्का बर्णन नहीं किया जा सक्ता डूबते हुओं की चिल्लाहट, घड़ियालों की उछल कूद और उनकी आपस की लड़ाई, बेबसों का प्राण बचाने के निमित्त हाथ पैर मारना और खून से मिले हुये पानी की लहरें कुछ ऐसी चीजें थीं कि जिसे देखकर सबकी आंखें झपक गईं।

डूबते हुओं में से ५ मनुष्यों ने किसी तरह अपने को उस उलटे हुये डोंगे तक पहुँचाया और उंस्के साथ अपने २ पैर पानी से उठा कर लपट गये और ज़ोर से चिल्लाने लगे।

सर विल्फ्रेड को उनकी इस अवस्था पर बड़ाही दुःख हुआ और वें चाहते थे कि अपनी डोंगी उनकी तरफ फेरें लेकिन फिर उनके साथियों, को उनके निकट पहुँचते देखकर इन्होंने अपने साथियों से कहा "भागो! बस यही समय है वे लोग अपने मित्रों की प्राणरक्षा कर लेंगे और ईश्वर ने चाहा तो वायु की चाल हमारे इच्छानुसार होगी और इस्तरह हम पाल भी लगा सकेंगे"।

इस आशा से भरी हुई वाणी ने सबकी हिम्मतें बढ़ा दीं। बेचारे कप्तान तो कुछ करही न सक्ते थे, वे नाव में पड़े हुये चेको को उस मिठाई के सन्दूक के फेंकने पर बहुतही खफा हो रहे थे हाँ उनके साथी नाव को बिजली की तरह ले जा रहे थे। इतने में सर विल्फ्रेड ने पीछे देखकर कहा कि उन जङ्गलियों ने अपने साथियों को उठालिया और वह देखो फि

आ रहे हैं परन्तु हिम्मत न हारना मुझे पूरी आशा है कि हम बच जाँयगे"।

कुछही देर में भागनेवालों को दो टापू दाहिने और बाँयें दिखलाई दिये। उन टापुओं के बीच में केवल एक मील का अन्तर था और यह एक निश्चय बात थी कि यह लोग उस्के मध्य से होकर जाँयगे। यहाँ पर सर विल्फ्रेड को एक दूसरा भय जान पड़ा उनका ध्यान यह था कि यदि कहीं ये टापू भी इन्हीं जाति से बसे हुये हों और वह हमारा आना देख रहे हों तो कहीं वे बढ़कर हमारी राह न रोक दें और तब फिर हम बे-तौर फँसें! क्योंकि इनका पीछा करनेवाले इनसे केवल आध मील की दूरी पर थे और बड़ीही शीघ्रता से इनकी ओर बढ़े आते थे।

सर विल्फ्रेड ने फिर अपनी बन्दूकों को भली प्रकार देखा और उन्हों ने यह निश्चय कर लिया कि यदि वे लोग निकट पहुँच गये तो हम इस अग्नि-शस्त्र द्वारा उनसे अवश्य छुटकारा करा लेंगे।

जब इनकी डोंगी दोनों टापुओं के बीच में पहुँची तो जान पड़ा कि दोनों टापू बड़ेही लम्बे थे और उनके बीच जैसा ऊपर कहा गया केवल एक मील का अन्तर था।

सर विल्फ्रेड ने अपनी डोंगी को बीचों बीच रक्खा और [illegible]ी प्रकार बराबर आध मील पर्यन्त चले गये। बार २ के [illegible]छे देखने से यह भी मालूम हुआ कि पीछेवाली डोंगियां

बहुत निकट पहुँच गईं हैं और साथही आगे जो दृष्टि उठाई तो उधर क्या देखते हैं कि उस टापू के दूसरे सिरे से कुछ काली काली बस्तु इधर आ रही हैं जो यथार्थ में कुछ डोंगे थे।

सत्तरहवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड ने यह देखकर कहा कि अब भी एक राह बचने की है। ये आगे आनेवाले डोंगे बीच धार से चले आते हैं और इस्में कोई सन्देह नहीं कि हमसे उनसे अवश्य एक टक्कर होगी वह लोग हमसे अभी कुछ अन्तर पर हैं वायु अब प्रबल होती जाती है मैं पाल लगाता हूं और कुछही देर के उपरान्त वायु इतनी प्रचण्ड हो जायगी कि जब तक वे बीच धारा में पहुँचें २ हमलोग अलग हटकर साफ निकल जाँयगे।

सर विल्फ्रेड की बातें यद्यपि हमारे पाठक पाठिका गण को आशा दिलानेवाली न मालूम हों परन्तु उनके साथियों को उनकी भविष्यबाणी पर पूरा विश्वास था। उस थोड़े काल में कि जिस्में उन लोगों का सर विल्फ्रेड से साथ रहा उनलोगों ने उनपर कष्ट तथा दुःख के समय भरोसा रखने का एक अच्छा पाठ सीख लिया था इसलिये उन ऊपर लिखी बातों के सुन्तेही वे शीघ्रता से डाँड़े मारने लगे। पाठकगण पर यह भी विदित रहे कि अभी लों कल के दोपहर से इनलोगों के मुंह में एक खील भी उड़कर नहीं गई थी और भूख से इनका बुरा हाल था। बुद्मा बड़ीही शीघ्रता से इनके पीछे चले आते थे और

वह डोंगियाँ जो आगे दिखलाई पड़ीं और जो गिनती में चारही थीं बराबर बीच धारे की ओर बढ़ती चली आती थीं।

इतने में हेक्टर ने कहा वायु की चाल अब बढ़ती जाती है और वास्तव में ऐसाही था। सर विल्फ्रेड ने इस्पर ध्यान नहीं दिया था और अब हेक्टर की बात सुन्तेही तुरन्त उन्होंने चेको की सहायता से पाल चढ़ाई! इस समय पछिवाले डोंगे केवल सौ गज के अन्तर पर थे; और जब उनलोगों ने इन्हें पाल चढ़ाते देखा तो और भी शीघ्रता से खेने लगे।

पहले तो ऐसा जान पड़ा कि पाल से कोई सहायता नहीं मिलती बरन् वह और भी उनकी शीघ्रता को रोक रही है परन्तु कुछही देर के उपरान्त वायु के झोंके आने लगे और नाव के दोनों ओर बड़ीही शीघ्रता से पानी कटता, पीछे की ओर जाता दिखलाई पड़ा।

हेक्टर—आहा! हमलोग कितनी शीघ्रता से आगे बढ़ रहे हैं ज़रा नाव के बाहर तो देखो। हमें तो अब खेने में कुछ परिश्रमही नहीं मालूम होता।

यह सुनकर सबनें जो पानी की ओर दृष्टि की तो देखा कि वह बड़ी तेज़ी से पीछे को दौड़ रहा है और नाव सनसनाती हुई आगे बढ़ रही है।

जब बुदमाओं ने अपने शिकार को अपने भयानक चंगुल से यों उड़ जाते देखा तो वे बड़े ज़ोर से चिल्ला उठे और अपनी पूरी ताकत नाव के आगे बढ़ानें में खर्च करने लगे परन्तु

इस्से क्या लाभ ! उनमें पाल लगाने का दस्तूरही न था, न जाने कैसे शाह काशांगो ने इस पाल को अपने डोंगे में रख छोड़ा था।

अब वे बुदमा इतना पीछे होने लगे कि देखते २ उनमें एक मील का अन्तर हो गया। भागनेवाले अपने पीछे के दुश्मनों से तो निश्चिन्त हुये पर अब उन्हें अपने आगे के बैरियों का ध्यान सताने लगा, और जिनसे वास्तव में बचना कठिनहीं था। डोंगों से अब केवल पाव मील का अन्तर रह गया था, और यह निश्चय हो गया कि उनसे अवश्य टक्कर लगेगी।

सर विल्फ्रेड ने पहले तो युद्ध करने की इच्छा की परन्तु उस गुप्तही रक्खा और यहाँ लों कि आनेवाले डोंगे बिलकुल निकट पहुँच गये और यह भली भाँति मालूम हो गया कि आनेवाले भी बुदमा थे उनकी इच्छा इनकी डोंगी को चारों ओर से घेर लेने की थी।

यदि यह भागनेवाले लड़ाई पर कटिबद्ध होते तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि विजयपताका इन्हीं के हाथों में लहराती परन्तु सर विल्फ्रेड में व्यर्थ मारकाट की आदत न थी और जहाँ लों बन पड़ता वह लड़ाई से परहेज़ करते थे।

इन्होंने शीघ्रही अपनी राय ठीक कर ली; और नाव में एक ओर बन्दूक रखकर लेट गये और अपने साथियों को भी ऐसाही करने की आज्ञा दे दी। सबने अपने डाँड़े रख दिये और नाव में लेट रहे।

इनकी नाव पानी कटाती अपनी उसी ऊपर लिखी चाल पर जा रही थी यहाँ लों कि वह उन चारों डोगों के बीचों बीच, जो दोनों और बीस २ गज़ के अन्तर पर थे पहुँच गई। इन बहशियों ने अपने नाव की चाल भी तेज़ की परन्तु जब देखा कि यह निरर्थक होगा तो तीर कमान और बर्छे लेकर खड़े हो गये।

एक बौछार; तीर, बर्छे, और पत्थरों की नाव की ओर आई! जिस्में चेको के हाथ में तो एक पत्थर लगा और एक तीर नाव के एक ओर की दीवार को भेद्ता हुआ हेक्टर की आस्तीन में लगकर उस्के सहित दूसरे ओर के नाव की दीवार में गड़ गया इस्के अतिरिक्त और कोई हानि डोंगी या उस्में बैठनेवालों की नहीं हुई।

ये लोग आगे निकल आये और बुदमाशों के आगे पीछेवाले डोंगे एक हो गये और वह सब मिलकर इनकी ओर बढ़े, परन्तु क्या लाभ था।

सर विल्फ़्रेड ने कहा ये लोग बड़ेही पाजी हैं शायद हमारा पीछा ये झील के किनारे तक न छोड़ेंगे। परन्तु हम इनसे आगेही हैं और अब कोई भय का स्थान नहीं।

जैसा कि अर्ल (राजा) या सर विल्फ़्रेड ने कहा था वे जङ्गली बड़ी दूर तक इनका पीछा करते रहे। परन्तु वह इनसे पीछेही होते जाते थे यहाँ तक कि वे इनलोगों की दृष्टि के बाहर हो गये। अब कोई भय नहीं था जहाँ लों दृष्टि जाती थी कहीं

किसी टापू का चिन्ह नहीं दिखलाई पड़ता था। इतनी देर में चेको ने यह मालूम किया कि वह गुलाम उस्से बात चीत कर सक्ता है। और जब यह सर विल्फ्रेड को मालूम हुआ तो वह चेको के द्वारा से उस गुलाम से प्रश्न करने लगे, और दोनों की बात चीत से जो बात मालूम हुई वह यह थी कि उस गुलाम का नाम टाँकोलो था जिस्को घटा कर सर विल्फ्रेड टौंक के नाम से पुकारने लगे। इस्का मकान कहीं शेरी के पश्चिमी किनारे पर था। वह दस बर्ष पर्यन्त गुलामी की अवस्था में रहा और जिस स्थान में वह रहता था वहीं चेको भी कुछ दिन अपने गुलामी के जीवन को काट चुका था और यही मुख्य कारण था कि दोनों एकही भाषा के ज्ञाता थे। काशागों ने टौंकही को सर विल्फ्रेड के साथ इसलिये करदिया था कि वह उधरही से अपने घर भी पहुँच जाये। क्योंकि जिधर और जिसजगह सर विल्फ्रेड जानेवाले थे उसी ओर उस्का मकान भी था। टौंक ने कहा कि वह उन्हें नदी शेरी के मुहाने तक ले जायगा और यह भी कहा कि जिस नाव पर वे सवार हैं वह काशाङ्गोही की है।

खेने की अब कोई आवश्यक्ता न थी इसलिये नाव पाल पर छोड़ दी गई; ठीक चार बंजे थे जब उन्हें शेड झील के दूसरे किनारे की काली २ झलक दिखाई पड़ने लगी। अब फिर उन्होंने खेना प्रारम्भ किया और शीघ्रता से उसी ओर चले।

टौंक इन लोगों को वहाँ के सब हालात बतलाता जाता था उसने यह भी कहा कि अब नदी शेरी का मुहाना कुछ दूर नहीं है परन्तु उस दरिया के दोनों ओर और विशेष कर उस्के मुहाने पर भी सरकण्डे का बड़ा भारी बन है जिस्में से होकर निकल जाना तनिक काम रखता है वहाँ केनिउ (डोंगे) को ढकेलते हुये ले जाना होगा।

एक घण्टे के उपरान्त उन्हें वह सरकण्डे का बन दिखलाई देने लगा। पाल अब उतार ली गई थी और उसी को बिछाकर कप्तान साहब और चेको खर्राटे ले रहे थे। सर विल्फ्रेड और उनके साथी बराबर डाँड़े चला रहे थे। धीरे २ जैसे २ नाव आगे बढ़ने लगी वैसेही वैसे अब झील की चौड़ाई कम हो चली, जिस्से यह मालूम होता था कि नदी शेरी का मुहाना अब पहुँच गया।

सर विल्फ्रेड ने एक दृष्टि उस झील की ओर डाली कि जो साफ और नीले आस्मान के प्रतिबिम्ब (साया) से एक अच्छे हाथों की रङ्गी तस्वीर जान पड़ती थी, उस्का वह चमकता हुआ साफ पानी वायु के चलने से कहीं २ चमकते सूर्य की किरनों में झिलमिला रहा था। परन्तु खेद का विषय है कि ईश्वर के ऐसे अच्छे शृङ्गार में वे भयानक टापू भी छिपे हुये हैं जिनकी वासस्थली पर भयानक से भयानक जाति अपना घर बनाये अपना जीवन निर्वाह करने के साथही दूसरों के जीवन का भी अन्त करते हैं। सर विल्फ्रेड ने टोपी

उतारकर शेड झील से बिदा माँगी और नाव खेते एक ऐसे स्थान में ले गये जिस जगह जल के ऊपर सरपत की छत सी बन रही थी। यह छत जल से आठ दस फीट ऊंची होगी परन्तु उस्पर भी रास्ते को उसने बहुतही रूँध रक्खा था।

बस यही स्थान इनकी रक्षा का था। रात की भयानक अँधियारी में बुदमा इस में इन्हें नहीं पा सक्ते थे। इतने में एक बड़ी चिड़िया को टौंक ने अपने डांड़े से मार गिराया परन्तु वहां कोई ऐसा स्थान न था कि जिस जगह आग जलाई जा सके इसलिये उन मरभुक्खों ने उसे कच्चाही खा कर पेट की जलती अग्नि की कुछ शान्ति की।

इस्के उपरान्त उन्होंने फिर खेना प्रारम्भ किया और जिस राह को वह आगे देखते थे वह धीरे २ पीछे हटकर दृष्टि से लोप होता जाता था इतने में किसी भारी झङ्खाड़ में उनकी नाव जकड़ गई और जितना उद्योग उस्के निकालने का उनलोगों ने किया सभी निरर्थक हुआ।

सर विल्फ्रेड—यह तो बहुतही बुरी हुई ! ऐसा जान पड़ता है कि अब रात यहीं काटनी पड़ेगी यदि कुछ प्रकाश होता और हम आग बना सक्ते—तो—हाय !—

इनकी बात अभी समाप्त भी न हुई थी कि बड़ा कोलाहल उनसे कुछही अन्तर पर सुन पड़ा, गौर से सुनने पर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई उस बन को रौंद रहा है।

अट्ठारहवाँ बयान ।

यह हुल्लड़ कुछ ऐसा अचांचक हुआ कि नाव का प्रत्येक मनुष्य सन्नाटे में आ गया और जबसे सर विल्फ्रेड झपट कर अपनी बन्दूक उठायें २ तबसे एक बड़ा भारी जानवर उसी आवाज़ की सूध से आया और मनों पानी उछालता हुआ दूसरी ओर निकल गया और सरपत के रौंदे जाने की चरचराहट बड़ी देर तक सुनाई पड़ी ।

सर विल्फ्रेड— ऐसा जान पड़ता है कि हमलोगों के आने से ये जन्तु भाग रहे हैं या और कुछ कारण हो परन्तु हमलोग बचे बहुत ! मेरी इच्छा है कि इस बन से निकल चलूं ।

यह कहकर वह टोंक से इस्बारे में राय लेने लगे परन्तु उसने कहा कि रात को सिवाय इधर उधर ठोकर खाने के सीधी राह या खुली जगह का मिलना असम्भव है, इस लिये यही उत्तम है कि हमलोग इसी सरकण्डे की छत के नीचे रात काटें । सबसे विशेष भय घड़ियालों का था परन्तु टौंक ने यह कहकर इधर से भी निश्चिन्त करा दिया कि घड़ियाल डोंगी पर नहीं आयेंगे और इस्के अतिरिक्त सबने पारी २ बन्दूक ले कर पहरा देने का भी बन्दोबस्त कर लिया ।

अब सर विल्फ्रेड को भी कुछ थकावट सी मालूम होने लगी ; और ये टौंक को प्रत्येक वस्तु से सचेत कर स्वयं एक कोने में थकावट मिटाने के निमित्त लेट गये परन्तु टौंक

से यह भी सहेज दिया था कि ज़रा से खटके में भी तुम हमें तुरन्त जगा देता।

सब लोग टौंक के अतिरिक्त जो एक मूरत की तरह चुपचाप बैठा था सोने लगे, उनलोगों ने वह चराई जो नाव में बिछी थी ओढ़ ली। थके हुये मुसाफिर अभी कुछही देर सुख से लेटे या सोये होंगे कि किसी ने जोर से सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ कर हिला दिया और वह मुस्तैद व्यक्ति तुरन्त आँखे मलता उठ बैठा देखा कि टौंक खड़ा है। जगाने का कारण पूछने पर उसने चुपचाप पश्चिम की ओर ऊँगली उठाई तो अर्ल ने क्या देखा कि पश्चिम दिशा में बहुत दूर आकाश लाल हो रहा है और एक विचित्र प्रकार की दुर्गन्धि से वायु भरी हुई थी।

सर विल्फ्रेड ने इस लालिमा को देखकर अनुमान किया कि कदाचित् सूर्य देव निकल रहे हैं परन्तु जैसेही उनकी दृष्टि उस धुंयें पर पड़ी जो आकाश को इनकी दृष्टि से छिपाये हुये था तो वह असल बात को समझ कर कांप गये। सहस्रों पक्षी अपने २ खोतों या बसेरा लेने के स्थान से उड़ २ कर इधर उधर फटफटाते हुये चिल्ला रहे थे और इस बन के चारों ओर से विचित्र प्रकार की चिंघाड़ें सुन पड़ती थीं।

सर विल्फ्रेड यह सब देख और बात को अच्छी तरह समझकर ज़ोर से चिल्लाये "परमेश्वर हमें बचाइयो। कैसी भयानक मृत्यु हमारे आगे है। वे बदमाश अरब और पाजी

बुदमा यहां तक हमारे पीछे आये और अन्त हमें न पाकर इस जङ्गल में आग लगा दी। ईश्वर ! ये लपटें कैसी डेरावने तौर से निकल रही हैं।

इनके कोलाहल मचाने से इनके साथी भीं सब चौंक पड़े। और जब उनको उस आफत की जिस्में वे फँसे हुये थे खबर हुई तो वे बड़ेही निराश होकर एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

अग्निशिखा के भड़कने की आवाज उन्हें स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती थी और उसके प्रकाश से कुल बन जगमगा रहा था।

सर विल्फ्रेड—कोई स्थान वा कोई बचने की तदबीर अवश्य करनी चाहिये यहां रहना तो अपने आप मृत्यु के मुंह में डालना है। जल्द डांड़े मारो।

यह कहकर उन्होंने अपनी डोंगी को जो फँसी हुई थी अच्छी तरह ऊपर नीचे देखा और बिना किसी की सहायता के तुरन्त निकाल कर बाहर कर दिया। अब इनके साथी नाव को खेकर एक खाड़ी में ले गये जो इस अग्निशिखा से दिखलाई पड़ती थी। कुछ देर तक तो इनकी डोंगी इस शीघ्रता से चली कि सर विल्फ्रेड को एक प्रकार की आशा हो गई कि हमलोग अवश्य बच निकलेंगे, परन्तु हा दैव ! आगे बढ़कर तो वह खाड़ी इतनी सकरी होगई कि लाचार इन्हें डांड़े बन्द कर देने पड़े और स्वयं सिमट कर एक ओर हो गये।

अब चिनगारियां भी इनके इधर उधर गिरने लगीं और धूंये की एक मोटी चादर ने इन्हें अपने घेरे में ले लिया। मगर तथा घड़ियाल इनके आस पास जल में बड़ीहीं बेचैनी से इधर उधर दौड़ते फिरते थे। गैंड़े तथा सांपों के झुण्ड सनसनाते हुये जिधर मुँह उठता भागे जाते थे। वायु इतनी गर्म हो गई थी कि मुंह झुलसा जाता था। इन आफतों से अब इन की हिम्मत छूट गई और अब उन लोगों का ठहरना कठिन हो गया।

अभाग्यबस ये लोग राह भूलकर खाड़ी से एक सकरे नाले में चले गये। अब कोई जीव जन्तु भी नहीं दिखलाई पड़ता था, अब कोई इनका साथी या इनके पास भी न था इस्पर सब से भारी आफत यह हुई कि नाव फिर एक-झङ्खाड़ में फँस गई और वहां से लाख २ सिर मारने पर भी न टसकी न टसकी।

इनके चारों ओर के सरपत सूखकर खङ्खड़ हो रहे थे और केवल एक चिनगारी उन्हें धधका कर इन लोगों की जान लेने के लिये बहुत थी। चेको अपने चीखने चिल्लाने से आकाश सिर पर उठाये हुये था। बेचारे के नङ्गे बदन पर जो चिनगारियां पड़ती थीं उनसे जल २ कर वह नाव में लोट रहा था, कि सहसा इनसे केवल दो फीट के अन्तर पर पीछे एक सरपत के जुट्टे में आग लग गई और वह बड़ी शीघ्रता से धांय धांय जलती हुई आगे को फैलने लगी। अब सर विल्फ्रेड कुछ

बोले परन्तु उनके साथियों को अग्नि के हुंकार के कारण कुछ न सुन पड़ा केवल उनके होंठ हिलते दिखलाई दिये।

इतने में टैंक नाव से उछल कर पानी में जा रहा इस्पर उस्के साथियों ने अनुमान किया कि वह आग में जलने से पानी में कूदकर प्राण त्यागने में विशेष सुबीता समझता था परन्तु नहीं टैंक की कुछ औरही इच्छा थी इस्के ध्यान में वह बात आई जो किसी को न सूझी थी।

टैंक जल में उतर कर खड़ा हो गया जो इस्के छाती तक था। इसने अपनी दृढ भुजाओं से पेंदे को पकड़ के नाव बाहर निकाल लिया और बड़ेही आश्चर्ययुक्त और असामान्य बल से उसे खींचता हुआ आगे ले चला। पृथ्वी इस्के पैरों से निकली जाती थी, वह साहसी मनुष्य नाव को तीस फीट तक खींचता हुआ ले गया। इस्के दोनों ओर आग भड़क रही थी परन्तु इसने इस्की कुछ परवाह न की और वह आग तथा पानी दोनोंही को चीरता हुआ आगे बढ़ा जाता था।

अब वे लोग एक २० फीट की चौड़ी झील में पहुंच गये थे जिस्के बीचों बीच कुछ फीट लम्बा एक बालू का टापू था। सर विल्फ्रेड और उनके साथी इसे देखतेही आनन्द की किलकारियाँ मारने लगे।

ईश्वर की कृपा से यहां मैदान खुला था इस लिये सबके सब डाँड़ा चलाने लगे और जब टापू के निकट पहुँचे तो क्या देखते हैं कि इस्पर बहुत से घड़ियाल साँप तथा गेंड़े घूम रहे

हैं। लेकिन इन्हें देखतेही सब एक २ करके भागे और इधर नाव इस शीघ्रता से आ रही थी कि टापू के निकट पहुँचकर इस्पर कई फिट ऊपर चढ़ गई।

नाव के ठहरतेही सर विलफ्रेड टापू पर उतरे और कहने लगे "उस करुणामय जगदीश्वर का असंख्य धन्यवाद है कि हमलोगों को मृत्यु के मुंह से निकालकर एक रक्षा के स्थान में पहुंचा दिया। इस्के उपरान्त सब डोंगी से बाहर आये और अपने प्राण के बचने का धन्यवाद करने लगे।

टौंक ने यथार्थ में बड़ीही बीरता का काम किया था परन्तु अब यह समय प्रशंसा करने का न था सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों की सहायता से डोंगी खींचकर टापू पर कर ली और फिर सबको एकत्रित करके ऊपर औंधी कर दी। इस्के उपरान्त इन्होंने चटाई को भिगोकर नाव की पेंदी पर लगा दिया और आप भी उलटी हुई डोंगी के भीतर चले गये और अपने साथियों से कहा कि अपने २ सिर बालू में करे लो।

उस औंधी डोंगी के भीतर वे ऊपर मुंह किये पड़े थे और बाहर की भड़कती हुई आग का कोलाहल सुन रहे थे। यह कोलाहल प्रत्येक क्षण बढ़ताही जाता था यहाँ तक कि वह अब इनके चारों ओर मालूम होने लगा। इस समय इनकी यह डोंगी तवे के समान तप रही थी और वायु तो इतनी गर्म थी कि ईश्वर की शरण!

चेको मारे गरमी के तिलमिला उठा और इतनी उछल कूद मचाई कि यदि सर विल्फ्रेड उसे थाँम न लेते तो डोंगी उलट देता। इस समय का प्रत्येक क्षण जो उन छिपे हुओं पर बीतता था वह उनके हिसाब एक २ युग से कम नहीं था। हमारी कलम में इतनी ताकत नहीं है जो उनके दुःख का किसी प्रकार उल्लेख कर सके। यह उनके चित्तही से पूछा जाय तो ठीक था जो अपने जीवन में कई बार भयानक से भयानक स्वरूप में मृत्यु का सामना कर चुके थे।

अन्त यह बला टली ! आँच कम जान पड़ने लगी हुल्लड़ भी कम मालूम होने लगा। इस्पर सर विल्फ्रेड ने कहा कि यद्यपि आफत टल गई है परन्तु अभी जिस स्थान पर सब लोग हो वहीं रहो"।

"अब आफत टल गई है !" आह ! इन दो चार शब्दों में कितना अमृत कूट कूट कर भर दिया गया था ! और इस अमृत से नहाये हुये शब्दों ने कितना असर जाकर उन टूटे हुये हृदयों पर किया जो अभी २ अपने मृत्यु के लिये प्रस्तुत थे, यह बयान से बाहर है !!!

ये लोग बहुत देर तक इसलिये अपनी जगह से नहीं हिले कि कहीं दूसरी आफत में न फँस जाँय। इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड सबसे पहिले बाहर निकले। इधर उधर देखकर, और एक २ करके उन्होंने अपने साथियों को बाहर निकाला।

उन्नीसवाँ बयान ।

वायु तो अब भी गरम थी और खाली गरम नहीं बरन् बहुतही असह्य थी परन्तु लपटें उनसे कहीं विशेष बढ़ी हुई थीं औ वे लपटें उस लालिमा के साथ जो सूर्य्य भगवान के निकलने का समाचार दे रही थीं मिल २ कर चमक रही थीं। उस बन की भूमि जो पहले गीली थी अब पत्थर की तरह कड़ी हो गई थी, नदी का जल राख और कोयलों के मिलने से काला हो रहा था।

यह देखकर हमारे दोस्तों को बड़ा खेद हुआ कि उनके डोंगे का पेंदा झुलस गया था। परन्तु जब उसे जल में ले जा कर डाला तो फिर उससे कोई खराबी नहीं मालूम हुई। अब प्रकाश अच्छी तरह फैल गया था कलकी रात जो अग्नि से जो बन को हानि पहुँची थी वह सब साफ २ दिखलाई देने लगी। अग्नि ने बन पर इतनी कोपदृष्टि की थो और उसे इतना भस्म करके साफ कर दिया था कि इन लोगों को अपने पश्चिम ओर शेड झील स्पष्ट रूप से दिखलाई देती थी। जो सरपत कि बहुतही हरे थे वे तो जलने से बच गये थे और बाकी कल झाड़ झङ्खाड़ की सफाई हो गई थी।

हमारे साहसी पथिकों ने फिर अपना पथ देखा! नाव आगे बढ़ाई गई! इनके दोनों ओर राख की ढेर लगी हुई थी। कहीं २ से धुँवा अब भी उठ रहा था। लपटें भी किसी स्थान

पर भड़क रहीं थीं। अब हमारे पथिकों को राह मिलने में कोई कठिनता न थी। वे ईश्वर का धन्यबाद अपने प्राण के बच जाने पर करते हुये बराबर डाँड़े चला रहे थे।

ईश्वर की भी क्याही महिमा है ! जिन लोगों को वे बुदमा तथा अरब अपने हिसाब जलाकर राख कर चुके थे वे उसी ईश्वर के अनुग्रह से इससमय राजी खुशी नाव पर बैठे बराबर आगे बढ़े जा रहे थे।

रास्ते में कितनेही घड़ियाल तथा जल औ स्थल दोनोंही के जीव झुलसे हुये पड़े मिले। वह सुन्दर और मनोहर पथ जिन्हें प्रकृत की रङ्गीन कलमों ने एक दिल में खुभ जानेवाले रङ्गों से रङ्ग कर सुरीली और मीठी आवाज में अपनीही प्रशंसा के राग गाने के लिये उत्पन्न किया था जल के किनारे जली हुई पाई गई। यह बड़ाही दुःखमय दृश्य था। इसी तरह इन लोगों ने नदी थारी के सुहाने में जो दो मील चौड़ा था प्रवेश किया।

समय अब दोपहर के निकट होगा जब ये लोग उस नदी के पानी पर जो अपनी सुस्त चाल के निमित्त विख्यात था जा रहे थे। झील का अब कहीं पता भी न था वह दो मील पीछे छूट गई थी परन्तु इनके दोनों ओर एक जला भुना बन दिखलाई पड़ता था। अब पीछा करनेवालों का इन्हें ध्यान भी न आता था।

सर विल्फ्रेड—उनलोगों ने हमें अवश्य मुर्दा समझ लिया है और अब हमलोगों को अपने भ्रमण का दूसरा भाग प्रारम्भ करना है।

इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने कुछ ऐसी २ बातें कहीं जिन्हें सुनकर उनके साथियों की भूख प्यास बन्द हो गई। वे लोग अपनी डोंगी को उन वृक्षों के छाये में, जो नदी के दोनों ओर उगे हुये थे, ले जा रहे थे। कोई जीव जन्तु अथवा कोई मनुष्य इन्हें रास्ते में न दिखलाई दिया। और न इनमें का कोई यही जानता था कि इन वृक्षों के पीछे क्या है।

सन्ध्या से दो घण्टे पहिले सर विल्फ्रेड ने ठहरने की आज्ञा दी। वह बहुत देर से कोई सुरक्षित स्थान निशा व्यतीत करने के लिये देख रहे थे और अब उन्हें एक छोटा टापू जो बीच धारा में था दिखलाई दिया, जिसपर दो बड़े २ वृक्ष और कुछ पत्थर की चट्टानें पड़ी हुई थीं। हमारे दोस्तों ने रात भर के लिये इसी स्थान पर अपना डेरा जमा दिया।

यह स्थान एक छोटे सुरंग के भाँति था। यदि जल से इसपर आक्रमण किया जाय तो यह भली भाँति उस आक्रमण से बच सक्ते थे।

टापू में उतरने के पहिले सर विल्फ्रेड ने अपनी डोंगी नदी के बाँयें किनारे पर लगाई और अपने साथियों के निमित्त कुछ भोजन लेने के लिये वन में पैठे। अभी वह कुछही दूर गये होंगे कि उन्हें जल की मुरगियों का एक झुण्ड दिखलाई

दिया। इस्से अच्छा और क्या मिलता उन्होंने तुरन्त उस्में से तीन या चार मार लीं और उन्हें लेकर फिर अपने साथियों सहित टापू पर आये।

टापू पर पहुँचकर यह मालूम हुआ कि यहाँ लकड़ी जलाने के लायक बहुत है। पहले तो सर विल्फ्रेड आग जलाने से हिचकिचाते थे कि कहीं इर्द गिर्द के जङ्गलियों को समाचार न मिल जाय पर अन्तमें लाचार होकर आग जलानीही पड़ी। वह मुरगियाँ जिन्हें चेको ने अच्छी तरह साफ कर दिया था आग पर भूनी गईं और सब ने मिलकर खाईं।

भोजन के तैयार होतेही सर विल्फ्रेड ने तुरन्त आग बुझा दी और कहने लगे कि मैं निश्चय नहीं कर सक्ता कि कब और कैसी आपत्ति हम लोगों पर आ जावे। केवल अग्नि का प्रकाश और धुँवा हम लोगों का समाचार जङ्गलियों पर्यन्त पहुँचा सक्ता है अब हम रात को तो आगे की मञ्जिल देखा करें गे और दिन को विश्राम करें गे।

इस्के उपरान्त सब एक जगह होकर और आनन्द से पैर फैलाकर चटाई ओढ़ के सो रहे हाँ सर विल्फ्रेड अपनी बन्दूक लेकर और एक ऊँची चट्टान पर बैठकर पहरा देने लगे। एक घण्टा उनका निर्विघ्नता पूर्वक समाप्त हुआ हाँ बीच २ में जङ्गली जन्तुओं की भयानक चिघाड़ इनके कानों तक पहुँच जाती जिसे सुनकर इन्होंने अनुमान कर लिया कि इर्द गिर्द कोई जङ्गली जाति नहीं बसती है।

अब धीरे २ एक ओर से चाँद निकला। जिस्के निकलतेही नदी का जल चाँदी के पानी की तरह चमकने लगा चारों ओर बन में एक सुफेदी बरसने लगी सच तो यों है कि ठण्ढी २ वायु के साथ चन्द्रदेव की शीतल किरनें एक ऐसे स्थान में बड़ी ही भली जान पड़ती थीं।

सर विलफ्रेड ने यह सब देखकर अनुमान किया कि अब यहाँ बैठकर रखवाली करना व्यर्थ है। यदि यहाँ वे जङ्गली होते तो कभी का हम पर आक्रमण कर दिये होते, अब चल के सोना चाहिये। यह बिचार कर वह अपने स्थान से उठे, और अपने साथियों के निकट जो पाल और चटाई ओढ़े हुये सोये थे लेट गये, और अपनी बन्दूक वहीं निकटही के पत्थर से लगा कर रख दी, कि इतने में एक कड़कड़ाहट की आवाज़ सुनाई पड़ी!

यह अचाञ्चक आनेवाली आवाज यद्यपि बहुत धीमी थी परन्तु इसे सुनतेही सर विलफ्रेड के रोंगटे खड़े हो गये उन की नींद आँखों से भाग खड़ी हुई। "काटो तो लहू नहीं बदन में।"

उन्होंने अनुमान किया कि कदाच यह कोई जानवर होगा जो तैर कर यहाँ आ गया है। फिर उन्हें ध्यान आया कि वे कुल झाड़ियों की, भोजन के योग्य जानवर की खोज में तलाशी ले चुके हैं, और इसके अतिरिक्त जल में से तैर कर कोई जङ्गली पशु यहां आनेही क्यों लगा। फिर उनका ध्यान

इस बात पर गया कि कदाच उनके साथियों में से किसी ने यह आवाज निकाली हो, परन्तु एकही दृष्टि में उन्हें यह भलीभाँति मालूम हो गया कि वे सब निद्रादेवी के सुखमय अंचल के नीचे पैर फैलाये आनन्द से सो रहे हैं।

सर विलफ्रेड यद्यपि बड़े बीर पुरुष थे और किसी आपत्ति की कुछ परवाहही न किया करते थे परन्तु इस घटना ने जिस का कुछ आदि अन्त समझही में न आता था उनके शरीर में एक कँपकँपी सी डाल दी। वह उठे और अपनी बन्दूक की ओर बढ़े!

ये ध्यान उनके चित्त में उस समय से भी, जितने में कि ऊपर की वह पंक्तियां पढ़ी गईं! कुछ और जल्दी आये। उन्होंने अपने साथियों को इसलिये नहीं जगाया कि कदाच यह धोखाही धोखा हो। यही सोचते उन्होंने अपनी बन्दूक भरी और उसी पहिली चट्टान के पास जाकर टहलने लगे।

चाँद, बालू तथा जल पर बहुतही साफ चमक रहा था परन्तु टापू के उन दोनों वृक्षों के नीचे अन्धकार था। सर विलफ्रेड धीरे २ इर्दगिर्द की झाड़ियों की ओर बढ़ रहे थे। अब लों उन्हें कोई सन्देह को पूरा करनेवाली वस्तु नहीं दिखलाई पड़ी थी। अब वह उन झाड़ियों के निकट पहुँचाही चाहते थे कि फिर वैसीही तीक्ष्ण कड़कड़ाहट उनसे दो गज के अन्तर पर हुई।

इसे सुनतेही सर विलफ्रेड ने तुरन्त घोड़ा चढ़ाया और बन्दूक के लबलबी पर हाथ रख दिया। इसके उपरान्त वे उन दोनों बृक्षों को देखने लगे जो इनसे केवल ३ गज के अन्तर पर थे। उनको ऐसा जान पड़ता था कि वह शब्द इन्हीं दोनों बृक्षों के बीच से आया था।

एक मिनिट पर्य्यन्त वह चुपचाप खड़े थे और वह अपना निशाना ताकनेही को थे कि इनके नेत्र में एक प्रकार का अन्धकार आ गया और निशाना हिल गया। अब इन्होंने फिर जो आँख मलकर निशाने के देखने के लिये उधर दृष्टि उठाई तो जो कुछ उन्हें दिखलाई पड़ा उससे उनके प्राण सूख गये।

वे देखते क्या हैं कि जिस स्थान पर दो बृक्ष खड़े थे उनके बीच में एक और उन दोनों बृक्ष से छोटा खड़ा हो गया है।

बीसवाँ बयान।

सर विलफ्रेड के रोंये यह देखकर खड़े हो गये, उनके हाथ काँपने लगे और वे बन्दूक दागणा भूल गये। परन्तु "क्या यथार्थ में यह बृक्षही है?" उनके चित्त में उसी समय यह प्रश्न उत्पन्न हुआ। इतनेही में वह कृत्रिम (नकली) बृक्ष, सहसा इनकी ओर शीघ्रता से झपटा, जिससे सर विलफ्रेड एक ओर नदी के किनारे पर बड़े जोर से गिर पड़े और जिस्से कुछ काल पर्य्यन्त उन पर मूर्छा सी रही। उधर बन्दूक जो इनके हाथ से पृथ्वी पर गिरी तो वह गिरतेही तुरन्त छूट गई।

मूर्छा के उपरान्त सर विलफ्रेड उठाही चाहते थे कि एक बड़े लम्बे जङ्गली मनुष्य ने इन्हें दबोच लिया । वह जङ्गली इतना लम्बा था कि सर विलफ्रेड को अपनी बुद्धि पर सन्देह होता था, तो भी उस बुड्ढे या कम से कम अधेड़ बेरेन (राजा) ने अपने प्राण बचाने के निमित्त, उस जङ्गली को एक ऐसा अड़ङ्गा लगाया कि जिससे वह कई पग पीछे हट गया।

अब सर विलफ्रेड ने चाहा कि झपट कर अपनी बन्दूक उठा लें, परन्तु वह जङ्गली इनका मतलब समझ गया और फिर इन पर झपटा, इसी छीन झपट में ये दोनों जल में जा पड़े।

सर विल्फ्रेड यद्यपि बलिष्ट थे, वरन उन्हें इसका घमण्ड भी था परन्तु पन्द्रहही मिनिट की लड़ाई में उन्हें यह भली प्रकार मालूम हो गया कि जङ्गली इनका भी उस्ताद है। उन्हें ऐसा जान पड़ता था कि यह जङ्गली केवल माँस और हड्डियोंही से बना हुआ है।

यह दोनों चुपचाप अपने २ बल को आजमा रहे थे, अपने २ बल पर दोनोंही को घमण्ड था। वह जङ्गली मारे भय के न चिल्लाता था। और इधर यह बूढ़ा अंग्रेज अपनी जाति के रीत्यनुसार अपने बैरी से अकेलाही समर किया चाहता था। वह छिछले जल में इधर से उधर चितपट कर रहे थे, और वह हबशी सर विल्फ्रेड से लड़ता तो क्या एक प्रकार का खेल खेल रहा था। हां सर विल्फ्रेड अपने बल के व्यय करने

में न हिचकिचाते और वह पूरा २ बल लगाते थे, कि सहसा हबशी ने सर विलफ्रेड को क्रोध में आकर पृथ्वी की ओर ढकेल दिया और सर विलफ्रेड गिरतेही बेहोश हो गये।

कुछ देर के उपरान्त जब इनकी आंखे खुलीं तो क्या देखते हैं कि वह हबशी इनपर झुक रहा है। अन्त उसने इन्हें साफ उठा लिया और जल की ओर ले चला। सर विलफ्रेड उस्के हाथों में एक बच्चे की भाँति तड़प रहे थे और अब इन्होंने चिल्लाने की इच्छा की परन्तु जङ्गली इनकी यह इच्छा समझ गया और उसने तुरन्त इनके मुंह पर हाथ रख दिया।

अब छुटकारे की केवल एक राह बाकी थी, और वह यह कि जब वह हबशी गहरे जल में पहुंचा तब सर विल्फ्रेड ने पुनः बल करना प्रारम्भ किया, कि जिस्से उस जङ्गली की पकड़ कुछ तो ढीली हो गई और कुछ छूट गई। सर विल्फ्रेड ने एक और ऐसा जोर किया कि जिस्से वह छूटकर पानी में जा रहे और गिरते २ सँभल कर खड़े हो गये। जङ्गली ने चाहा कि इन्हें जल के भीतरही दबा दें, और सच मुच दबाही दिया, कि एक काई लगे पत्थर पर दोंनो के पैर पड़ गये और दोनोंही फिसल कर गट पट हो कर गिर पड़े, और उस टापू से कुछ दूर हो गये, परन्तु वह जङ्गली उछल कर फेर इनकी खोपड़ी पर आ पहुँचा।

इस गड़बड़ में दोनों ने उस शकल को, जो चट्टान पर से कूद कर उन की ओर बढ़ रही थी नहीं देखा और निकट था

कि सर विल्फ्रेड का अबकी बेर अन्तही हो जावे, कि अकस्मात् कहीं से उस हबशी के सिर पर बन्दूक का कुन्दा बड़े बेग से आ लगा कि जिस्से वह हबशी बेहोश हो गया; और जिन हाथों ने कि हबशी पर वार किया था वेही अब सर बिल्फ्रेड की सहायता के निमित्त बढ़ रहे थे।

यह हेक्टर और टैंक थे, बाकी और सब इनके साथी किनारे पर खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। सर विल्फ्रेड ने हेक्टर के हाथों को चूम लिया और कुछ शब्द धन्यबाद के कहे इस्के उपरान्त यह भी कहा कि जङ्गली को जल में से उठाकर टापू में ले चलो मेरी ओर से निश्चिन्त रहो मुझे तनिक सी चोट लग गई है।

वे तीनों उस हबशी को खींचते हुये टापू पर ले आये। इतनी बड़ी लाश को देखकर सबके तन से प्राण निकल गये वह लम्बा व्यक्ति एक देव की भाँति पृथ्वी पर पड़ा हुआ था। सर विल्फ्रेड ने इस्का कुल वृत्तान्त अपने मित्रोंसे से कह सुनाया और अन्त में यह भी कहा कि "अपने जीवन भर में मुझ से ऐसे मनुष्य से कभी साक्षात नहीं हुआ था और आपलोग सच जानें कि इस्के हाथों में मैं एक बच्चे के समान था। इस्में कुछ आश्चर्य नहीं इस्के हाथ पैर को देख के आपलोग स्वयं अनुमान कर सक्ते हैं। जान पड़ता है कि यह अभी कहीं गुलामी से भाग के आया है इस्के पैरों में बेड़ियों के चिन्ह हैं। जो हो; परन्तु क्या देवजाद जवान है। यह ठीक आठ फीट

लम्बा होगा। यह अभी केवल बेहोश है इस्के हाथ पैर भी तो बाँध दिये जाँय"।

उसी समय पाल के रस्से लाये गये और उनसे उस्के हाथ पैर जकड़ दिये गये। टौंक बड़े ध्यान से उस्की ओर देख रहा था, और फिर सहसा काँपने लगा, इस्के उपरान्त वह एक किनारे जाकर चेको से कुछ बात चीत करने लगा। टौंक ने जो कुछ कहा उसे सुनकर चेको भी काँपने लगा और फिर एक भय भीत दृष्टि उस देव पर डाल कर उस्से दूर जा बैठा।

सर विल्फ्रेड—(चेको से) अबे कुछ पागल तो नहीं हो गया है, इस बेवकूफी का तेरे तात्पर्य क्या है?

वह असान्ती यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड के निकट आया और कहने लगा कि टौंक कहता है, कि यह व्यक्ति मनुष्यों को खानेवाला है और टौंक के गाँव के निकट से आता है बहुत से मनुष्यों के खानेवाले वहाँ रहते हैं। सुफेद मनुष्यों की तरह उनके हथियार हैं।

सर विल्फ्रेड—यह सब कहानी है!

परन्तु फिर इस्के उपरान्त वे चेको को बीच में रख के टौंक से बातें करने लगे और उन्हे इससे यह मालूम हुआ कि उस्के गाँव से तीन दिन की राह पर जिधर से कि सूर्य निकलते हैं उधरही एक लम्बा पहाड़ है, और उसी के पीछे लोग कहते हैं कि लाल पत्थरों का बना हुआ एक बहुत बड़ा नगर है उसमें इसी देव के भाँति एक जाति मनुष्य के खाने वालों

की बस्ती है। टौंक को निश्चय था कि यह मनुष्य भी उसी जाति में का है। उस नगर की राह केवल एक राह के जिसे मृत्यु की घाटी कहते हैं और कोई नहीं, यह मृत्यु की घाटी बड़ीही अँधेरी है जिस्से जल्दी किसी का जाना असम्भव है। टौंक की बातों से जान पड़ा कि आजतक उस नगर को किसी ने देखा नहीं, परन्तु उस्का विश्वास सबको है कि एक ऐसी जाति और लाल नगर पहाड़ के उस ओर अवश्य है। जिरह करने पर भी उस्की बातों में कोई फर्क नहीं मालूम हुआ।

सबलोग टौंक की जबानी इस कहानी को सुनकर आश्चर्य में आये परन्तु सर विल्फ्रेड ने कहा, कि मुझे न तो मृत्यु की घाटी और न लाल नगरही के होने पर विश्वास है हाँ मनुष्यों की खानेवाली जाति अवश्य हो सक्ती है, जिस्का उदाहरण यह हमारे सामने पड़ा है।

हेक्टर—मैं अनुमान करता हूं कि कहीं इस जाति के और लोग भी यहाँ न हों।

यह कहकर उसने फिलिप को साथ लिया और कुल टापू छान डाला। इधर अब इनका कैदी भी होश में आया और इनलोगों की ओर भयानक दृष्टि से देखने लगा। उस्का चेहरा ऐसा डरावना था कि किसी की हिम्मत उस्के पास जाने की नहीं पड़ती थी यद्यपि वह भली भाँति बँधा हुआ भी था।

कप्तान—भई मेरी हड्डियाँही गलें। यदि यह मनुष्यों को खानेवाला न हो।

ईश्वर जाने हवशी ने इन शब्दों का क्या अर्थ निकाला कि उसने तुरन्त उठकर अपने बन्धन तोड़ डाले और जोर से चिल्ला कर जल में कूद पड़ा। इस्के उछलतेही कप्तान जोली जो नदी के किनारेही खड़े थे लुढ़कते पानी में चले, और चिल्ला उठे "हाय मार डाला। चेको तथा टौंक ने चिल्ला कर झाड़ियों का रास्ता ताका। हां हेक्टर ने तुरन्त बन्दूक उठा ली और जब उस मनुष्य भक्षक या राक्षस ने अपना सिर पानी में उठाया तो वह गोली माराही चाहता था कि सर विल्फ्रेड ने रोक दिया और बोले "ना !!! जाने दो, उस्की स्वतन्त्रता उस्से मत अलग करो, मुझे बड़ा शोक है कि मैं उस्से बात चीत न कर सका। हेक्टर ने कहा जी ठीक है वह आपका ऐसाही तो दोस्त है और आप से बातही चीत करने के लिये तो पर और आखों या कम से कम हाथों पर उठाये जाता था।

बहुत देर तक सब उस्को तैरता देखते रहे। सब को आशा थी कि वह घड़ियालों का शिकार हो जायगा परन्तु नहीं वह बड़ीही शीघ्रता से तैरता हुआ उस पार पहुँचा और फिर सबकी आँखों से छिप गया।

इस्के उपरान्त चेको तथा टौंक फिर दम दिलासा देकर झाड़ियों के बाहर लाये गये और ये लोग दिन भर उसी टापू पर रहे। बीच में टौंक तथा सर विल्फ्रेड दूसरे किनारे से कुछ शिकार भी कर लाये और आग पर भून के सब ने खाया।

सन्ध्या समय सब कोई मिलकर फिर डोंगी पर सवार हुये और आगे बढ़े।

इक्कीसवाँ बयान।

नवम्बर (अंग्रेजी का ग्यारहवाँ महीना) के पहिले सप्ताह में सर विल्फ्रेड अपने साथियों सहित नगर "लीबा" में जहाँ बसूरी जाति बसती है पहुँचे। यह नगर नदी शेरी की एक साखा पर बसा हुआ है। झील शाड से यह स्थान ६०० मील के अन्तर पर है

अब यह लोग वहां पहुंचे तो इनकी अवस्था बड़ीही न थी। किसी को घाव से दुःख पहुंचता था कोई बोखार से पीड़ीत था। तात्पर्य यह कि एक २ दुःख सभी को लगा हुआ था।

इनकी पीछे छोड़ी राह में कोई ऐसी दिलचस्प घटना नहीं हुई परन्तु हां जो जो कष्ट धूप तथा भूख में उन्हें उठाने पड़े उनका न कहनाही अच्छा है।

वह केवल रात को अपनी राह चलते, खाने के निमित्त जो फल फूल मिलता उसी पर दिन काटते। मछली या अन्य जन्तुओं का माँस इन्हें बड़ीही कठिनता से प्राप्त होता कारण यह कि वह बन्दूक हत्याही नहीं छोड़ सके थे। प्रथम तो इस्से आस पास के जङ्गलियों को खबर हो जाती, दूसरे इनके पास बारूद और छर्रे भी बहुत कम थे। एक बार वे

एक जङ्गली जाति के हाथों फँस गये थे परन्तु बड़ी कड़ी लड़ाई के उपरान्त वहां से छुटकारा मिला। हां टौंक ने सहैन इनके साथ जान लड़ाई। और सच तो यों है कि यदि वह साथ में न होता तो इनलोगों का रास्तेही में अन्त हो जाता। वह रास्ते से भली प्रकार परिचित था और यह भी जानता था कि किस स्थान पर कौन और कैसी जाति बसती है।

भ्रमण के अन्तिम ७० मील इन्होंने पैदल चलकर समाप्त किये, कारण यह कि नदी की साखा का जल इतनी शीघ्रता से बह रहा था कि उस्पर नाव चढ़ाना तनिक काम रखता था।

अन्त एक दिन लड़खड़ाते हुये ये लोग नगर लीबा में जाही तो पहुंचे। टौंक इसे देखतेही प्रसन्नता से उछल पड़ा क्याकि यही उस्की जन्म भूमि थी जिसे आज भाग्यबश कितनेही बर्षों के उपरान्त उसने देखा था।

बसूरी जाति बड़ी दगाबाज और पाषाणहृदय होती है परन्तु टौंक के पिता के कारण जो यहां एक सर्दार की भांति रहता था इन सुफेद मेहमानों को किसी प्रकार का कष्ट उन लोगों से न उठाना पड़ा। बरन् जब टौंक ने कुल हाल इनके भ्रमण का आदि से लेके कह सुनाया तो उस जाति को इनसे एक प्रेम सा हो गया।

सर विल्फ्रेड एक महीने तक जब वहां सुख की घड़ी बिता चुके तो अब इन्होंने आगे चलने की इच्छा की। नगर लीबा पहाड़ों में बसा हुआ है और वहां का जल वायु भी

ईश्वर के अनुग्रह से बहुतही अच्छा था इसलिये ये लोग एकही महीने में हृष्ट पुष्ट हो गये। हमारे सर विल्फ्रेड थे भी बड़ेही तीक्ष्णबुद्धि के मनुष्य, इन्होंने रास्तेही में टौंक की भाषा अच्छी तरह सीख ली थी। औ अब इस जाति से खूब घुल २ कर बातें करने लगे। इन्होंने बहुत से मनुष्यों से मृत्यु की घाटी और लाल नगर के बारे में अनेकानेक प्रश्न किये परन्तु जो कुछ यह सुन चुके थे उससे विशेष एक शब्द भी मालूम न हो सका, इसलिये ये लोग एक महीने के उपरान्त एक बेजाने और भयानक देश के भ्रमण के लिये तैयार हुये, जो वसूरी नगर से पश्चिम और दक्षिण कोने पर है।

सर विल्फ्रेड लेगाश से चलती समय बुद्धिमानी करके एक पेनासिल तथा कुछ कागज अपने साथ लेते आये थे इससे वे नित्य प्रति की घटनाओं को लिखते परन्तु अब उस्की आवश्यक्ता न थी इसलिये नगर लीवा छोड़ने के पहले उन्होंने इस रोजनामचे को सरदार वसूरी के हवाले किया और सहेज दिया कि यदि हमलोग मृत्यु की घाटी से लौटकर न आयें तो इस रोजनामचे को समय मिलने पर किसी सुफेद आदमी के हवाले कर देना।

छठीं दिसम्बर के प्रातः काल; सामनेही एक बड़ाही मनोहर दृश्य दिखलाई पड़ता था। तमूरान पर्वत की बरफ से ढँकी हुई चोटियां सूर्य की किरनों से भिन्न २ प्रकार के रंगों से चमक रही थी। नगर के चारों ओर एक घना और सोहाना

बन लहलहा रहा था, और वह छोटी सी नदी इस्के बीच से बहती हुई बड़ीही रमणीक जान पड़ती थी। सभ्य संसार में यद्यपि बड़े २ नगर हैं जैसे लन्दन और पेरिस इत्यादि। परन्तु उनमें यह सौन्दर्य कहाँ? और हो भी तो कैसे हो? कहाँ उस सर्वगुणसम्पन्न जगदीश की सुन्दर रचना; और कहाँ तुच्छबुद्धि मनुष्य के एक लगातार परिश्रम का उदाहरण। भला इसका औ उस्का मेल क्या सम्भव है?

जब सूर्य देव धीरे २ नीले आकाश में ऊँचे हो रहे थे, तो उस समय दो बड़े २ डोंगे थे, जिनपर सर विल्फ्रेड वसूरी जाति के, बड़े सरदारों सहित बैठे धीरे २ दूसरे किनारे की ओर जा रहे थे। उस किनारे पर पहुँच के वसूरी जातिवालों को विदा करने के निमित्त वे ठहर गये।

इस समय वहाँ सहस्रों घण्टे और ढोल बज रहे थे और वह कोलाहल मच रहा था कि कान पड़ा शब्द न सुन पड़ता था; और यह बात उस जाति की ओर से किसी विशेष प्रतिष्ठितही मनुष्य के निमित्त की जाती थी। अन्त ये लोग वहां से आगे बढ़े और टौंक के राह दिखलाने से ये कुछही काल के उपरान्त अपने मित्र वसूरियों के नेत्रों से ओझल हो गये।

हमारे दृढ़चित्त पथिकों के पास कुछ ऐसा विशेष असबाब भी न था। सर विल्फ्रेड, फिलिप, तथा हेक्टर के पास अंग्रेजी, उत्तम राइफेल्स (बन्दूकें) थीं। कप्तान जोली के पास, शाह

कसांगो की दी हुई पुराने चाल की एक बन्दूक थी। चेको और टैंक कमान तीर तथा बरछे से सुसज्जित थे।

सर विल्फ्रेड की किफायत से इस समय भी ५०० कारतूस ३ बदूकों के वास्ते बच रहे थे, और कप्तान साहब के पास एक थैला बारूद तथा गोलियों का मौजूद था। इस्के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति के पास एक २ थैला खाने पीने की वस्तुओं तथा अन्य आवश्यकीय चीज़ों से भरा हुआ था।

देश के जिस प्राँन्त में वे इस समय भ्रमण कर रहे थे वह बड़ाही हरा भरा और उपजाऊ था, परन्तु वहाँ कोई जाति उन देवों के भय से नहीं बसती थी। इन लोगों ने अन्त रात को एक स्थान पर डेरा डाला। कप्तान साहब एक बड़ा और मोटा हिरन मार लाये जिस्का कबाब बनाया गया और सबने मिलकर भोजन किया। रात को पारी २ सबने पहरा दिया और फिर तड़का होतेही आगे के लिये कूच !!!

दूसरे दिन, इन्हें पहाड़ी भूमि मिलने लगी जो और भी हरी भरी थी और इस्में बहुतसी बहुमूल्य लकड़ियाँ भरी पड़ी थीं। इसी भाँति भ्रमण करते हुये, ये लोग एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ से भूमि लगातार पहाड़ की ओर ढालुवाँ होती चली गई थी। यहीं पर एक छोटा परन्तु गहरा जल का सोता भी बह रहा था। इनलोगों ने यह देखकर अपने दूसरे पड़ाव के लिये यही स्थान स्थिर किया।

टैंक ने अब बड़े भय के चिन्ह दिखलाने प्रारम्भ किये उसने इनलोगों को आग जलाने के लिये मना किया जिस्से सब को बड़ाही क्लेश हुआ, फिर भूमि पर सोने से रोका और लाचार उनलोगों को वृक्षों पर चढ़ के बसेरा लेना पड़ा। सच मुच भूमि पर सोना बड़ाही भयानक निकला; क्योंकि रात को अनेक जङ्गली पशु इनलोगों के वृक्षों के नीचे आये और प्रातःकाल पर्यन्त इन्हीं की ताक में नीचे बैठे रहे। परन्तु कुशल हुई, वे लोग सबेरा होतेही बिना किसी हानि पहुँचाने के लौट गये।

प्रातःकाल सब ने वृक्ष से, उतर कर उस सोते में स्नान किया और कुछ खा पी कर फिर आगे बढ़े।

राह अब बहुतही ढालुवाँ होने लगी यहां तक कि उन्हें मालूम होता था कि हम ऊंचे २ पहाड़ों के बीच में हो गये हैं। कुछही दूर जाने पर वही राह जो अब तक ढालुई थी सकरी भी होने लगी। होते २ वह एक जगह से दाहिनी ओर को घूम गई। हमारे सर विल्फ्रेड सबके आगे थे, और जब वे इस मोड़ पर पहुँचे तो "अरे!" कहकर खड़े रह गये।

इनसे पाव मील के अन्तर पर यह रास्ता एक सकरे और अन्धकारमयी गुफा के दरवाजे पर जाकर समाप्त हो गया था। इस रास्ते के दोनों ओर, दो बड़े ऊंचे २ पहाड़; बड़े २ वृक्षों और हरी २ लताओं से सिर से पैर तक ढँके खड़े थे। उस्के बीच से नीला आस्मान, इन हरेभरे पहाड़ों की चोटियों

पर शामियाने की तरह तना हुआ था। उन पहाड़ों की ऊंचाई उस स्थान से, जहां ये मनुष्य खड़े थे ठीक १५००० फीट की थी।

सर विल्फ्रेड—(अपने साथियों से) मृत्युघाटी का दरवाजा देखो वह तुम्हारे सामने है। और—अरे! यह इस्की रखवाली करनेवाला कौन बैठा है?

बाईसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड की अन्तिम बात सुनकर सब चौंक पड़े। उनलोगों ने अनुमान किया कि कदाच् देवों की कुछ फौज इस घाटी का पहरा दे रही है। परन्तु जब उस ओर दृष्टि की तो जान पड़ा कि एक बड़ा शेर बबर ठीक गुफा के द्वार पर बैठा हुआ इनलोगों को घूर रहा है। और जब इनलोगों को उसने आगे बढ़ते पाया, तो वह भी सामना करने के लिये खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड—मृत्यु की गुफा के वास्ते यह कैसा ठीक दरबान है। अब इस रखवाले से अवश्य हमें लड़ाई मोल लेनी होगी, क्योंकि मैं उसे दिखलाया चाहता हूं कि मैं भी बीरता तथा साहस से तुम्हारी गुफा में घुसा चाहता हूं।

कप्तान—परमेश्वर बचाइयो! देखो तो! अजी उस्की तरफ देखो, यह कैसा मुझे आँखें निकाल २ कर घूर रहा है। ईश्वर जाने क्यों मुझसे ईश्वर की सृष्टि मात्र शत्रुता मानती है। हे भगवान!

सर विल्फ्रेड अपने साथियों सहित बराबर आगे बढ़ते चले गये, यहाँ लों कि अब उस्से केवल बीस गज़ का अन्तर रह गया। तब वह एक बारगीही उठा, और इधर उधर देखकर हवा में दुम हिलाता गुफा के भीतर चला गया।

सर विल्फ्रेड—अरे ! ये महाशय तो स्वयं अपनेही घर में घुस गये। अब यह आवश्यकीय बात है कि हम इनसे सचेत रहें, मैं तो इन्हें यहाहीं ढेर कर दिये होता परन्तु मेरी इच्छा बन्दूक दागने की नहीं है।

अब वे गुफा के दरवाजे पर जा खड़े हुये। सबपर यह भली भाँति विदित था कि वह कैसे भयावँने स्थान में जाने के लिये खड़े हैं। टौंक का चेहरा पीला हो रहा था और चेको सबके पीछे खड़ा बेंत की तरह काँप रहा था।

सर विल्फ्रेड—यह स्थान कुछ भी भयानक नहीं जान पड़ता, इधर के रहनेवालों के चित्त पर इन देवों का कुछ ऐसा भय जम गया है, कि वे भाँति २ के बे सिर पैर के, मन गढ़त किस्से कहते हैं। तुम स्वयंही देखो ! यह केवल एक गुफा है जो भीतरही भीतर चक्कर खाती दूसरी ओर निकल गयी है।

टौंक—वारा ऐल गोरो (मृत्यु की गुफा)।

यह कई बार वह कहकर पीछे हटा, परन्तु सर विल्फ्रेड उसी तरह वहाँ खड़े रहे और जब उन्होंने अपने दिलही दिल कुछ निश्चय कर लिया तो निधड़क आगे बढ़े, और मृत्यु की

गुफा में जाने को प्रस्तुत हो गये । एक के उपरान्त दूसरा, योंही सभी ने गुफा में प्रवेश किया । चेको भी मचलता हुआ सबके पीछे चला ।

वह रास्ता केवल ३० फीट चौड़ा और बहुतही ऊचाँ था। पत्थर के बड़े २ ढोंके इधर उधर पड़े हुये थे। हरियाली कहीं नाम को भी नहीं दिखलाई देती थी। दोपहर को इस्में ऐसा मन्द प्रकाश आ रहा था कि मानों सन्ध्या हो गई है, और सच तो यों है कि वहां से दिन का अनुभव करना सर्वतो भाव से असम्भव था । गुफा की छत में कहीं २ छेद भी थे जिस्से, झर २ करती ठंढी २ वायु शीघ्रता से आती थी ।

ये लोग बराबर इसी तरह चले गये, और ६ माईल जाने के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने अनुमान किया कि मृत्यु की गुफा का अब अन्त हो गया परन्तु वह राह भुलभुलैयां की तरह बल खाती चली गई थी, दो घण्टे उस्के उपरान्त भी हो गये, परन्तु फिर भी गुफा के अन्त होने का कोई चिन्ह न दिखलाई दिया ।

अब सन्ध्या के चार बजे थे और सर विल्फ्रेड बड़ीही हैरानी और थकावट से रास्ता चल रहे थे । इनके साथी अब हिम्मत हारने लगे । इनलोगों की बुद्धि कुछ काम न करती थी, क्योंकि जब उन्होंने गुफा में प्रवेश किया था तो उनका मुँह पश्चिम की ओर था और अब वे दक्खिन की ओर जा रहे थे ।

यद्यपि सर विल्फ्रेड के चित्त में भी, भाँति २ के भय, इस गुफा के अन्त न होने पर, आ २ कर उनके चित्त को हिलाये देते थे; परन्तु उन्होने कोई चिन्ह इस प्रकार का अपने चेहरे से प्रगट न होने दिया।

अब ५ बजे थे क्योंकि सर विल्फ्रेड के पास घड़ी थी और उस्से समय मालूम होता था। अब वे एक स्थान पर खड़े हो गये और सोचने लगे कि हमें राल्फ हाल्डेन की खोज में आगे बढ़ना चाहिये या यहीं से बैरङ्ग वापस लौटना चाहिये। यदि यह रास्ता इसी तरह अपना विस्तार बढ़ाता जायगा तो बड़ी कठिनता होगी, हमलोग भूख और सर्दी से मर जाँयगे। (कुछ और ठहरकर) परन्तु क्या परवाह है! मरदों की बात एक होती है! मैं आगे अवश्य बढ़ूंगा।

हमारे सर विल्फ्रेड में भली बातों के लिये हठ भी बहुत थी।

सर विल्फ्रेड—सुना भाइयो! मैं अब यहाँ से न लौटूगा जिस्को हमारा साथ देना हो हमारे साथ चला आवे और जिसे साथ न देना हो वह लौट जावे अन्त यह राह कहीं न कहीं तो समाप्ति को अवश्यही पहुँचेगी।

यह सुनकर सब मरने मारने पर कमर बाँधकर आगे बढ़े, अभी ये लोग कुछही दूर और आगे गये होंगे कि टौंक जो आगे था उछल पड़ा, और इसने सर विल्फ्रेड को, जो इस्के पीछे थे इशारे से अपने पास बुलाया। सर विल्फ्रेड झपट कर जब उस्के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं कि एक बड़ा वृक्ष

उस्के पासही पड़ा हुआ है । यह देखकर वे बहुतही प्रसन्न हुये और बोले " भाई वाह ! क्या सौभाग्य है, न जाने कितने वर्षों का यह सूखा वृक्ष हमलोगों की राह में पड़ा है। आज की रात हम यहीं बितावेंगे । चेको ! इस्में से लकड़ियाँ तोड़ कर तनिक आग तो जलाओ ।"

आग जलाई गई । सबने अपना भोजन जो साथ लाये थे बड़ीही प्रसन्नता से अग्नि पर गरम कर के खाया। पानी अब बिलकुल समाप्त हो गया । इस्के उपरान्त सोने की तैयारी होने लगी । सर विल्फ्रेड ने कहा रात भर आग धधकती रहे । जो व्यक्ति पहरे पर रहे उसे इस्का ध्यान अवश्य चाहिये ।

कप्तान—(जो बड़े प्यासे थे) मुझे ऐसा जान पड़ता है कि जैसे कहीं जल बहता हो ।

यह सुनकर सबने उस ओर ध्यान दिया परन्तु कुछ भी न सुन पड़ा, इस्से उनलोगों ने अनुमान किया कि यह केवल कप्तान साहब की दिल्लगी है, परन्तु सर विल्फ्रेड ने फिर कान पृथ्वी पर लगाया और बोल उठे " कप्तान साहब ठीक कहते हैं ।" अवश्य जल कहीं निकटही बहता है। हेक्टर ! तनिक वह जलती लकड़ी उठाकर मेरे पीछे तो आओ " ।

हेक्टर ने एक जलती हुई लकड़ी मशाल की तरह उठाई, और फिर अपनी बन्दूक लेकर सर विल्फ्रेड के आगे हो लिया, टौंक भी इनके साथ २ हो गया, और जैसे २ ये लोग आगे बढ़ते थे वैसेही वैसे पानी की आवाज और स्पष्ट रूप. से सुन

पड़ती थी; यहाँ लों कि वह एक खाई के किनारे पहुँचे और यह मालूम हो गया कि इसी में से वह आवाज़ आती है।

सर विल्फ्रेड घुटनों के बल झुक कर मशाल की रोशनी में नीचे देखने लगे परन्तु कुछ दिखलाई न दिया।

सर विल्फ्रेड—मुझे तो कुछ भी नहीं दिखलाई देता। परन्तु जल है अवश्य; प्रातः काल इस्का पता लगेगा।

हेक्टर—और कोई उस्पार जाने का रास्ता भी अवश्यही होगा क्योंकि वह देव लोग आखिर किसी चीज पर से तो होकर आते जाते होंगे।

सर विल्फ्रेड—तो क्या वह आते भी हैं? मुझे तो आशा नहीं—

यह कुछ आगे कहा चाहते थे कि एक भयानक आवाज़ ने इनकी आवाज़ बन्द कर दी। और उसी समय एक बड़ा शेर बबर दहाड़ कर दाहिनी ओर से इनके सामने आया। इस्का सामने आना टौंक के हक में विष हो गया, वह मशाल फेंक कर पीछे हटा; और पीछे हटतेही बड़ेही खेद का विषय है कि उस गहरे और अँधेरे खाई में जा रहा।

इसने गिरते समय हाथ फैला दिये और खाई के आगे निकले हुये पत्थरों में जोरसे चमट गया। परन्तु कुछ न हो सका! वह क्षण २ पर नीचे को फिसलताही जाता था।

सर विल्फ्रेड के हाथों के तो जैसे तोते उड़ गये। परन्तु अब क्या हो सक्ता है। टौंक! बेचारा टौंक! पत्थरों से चिमटा हुआ सहायता के लिये चिल्ला रहा था।

तेईसवाँ बयान ।

उसके चिल्लाने से कलेजा फटा जता था और वह बेचारा अब या तब गिरनेही पर लगा था । जो हो, ऐसे समय सहायता भी बड़ी कठिनता से की जा सक्ती थी । वह मशाल जो अबतक पृथ्वी पर पडी हुई जल रही थी, शेर के आक्रमण को रोके हुई थी । उधर वह खड़ा क्रोध से काँप रहा था और मानों मशाल के बुझने की प्रतीक्षा कर रहा था । सर विल्फ्रेड ने उसी समय अपने को पृथ्वी पर गिरा दिया, और दोनों हाथ से टौंक की कमर थाँभ कर हेक्टर से बोले "शीघ्र बन्दूक मारो ! जबतक मशाल जल रही है उसे मार डालो । आँख पर गोली लगे । "

हेक्टर को भला ऐसी दुर्घटना से काहे को कभी सामना पड़ा होगा, परन्तु इस ध्यान ने, कि इतनी जानें केवल उस्के निशाने की सचाई पर बचती हैं ! उसे हिम्मत दिलाई, और उसने निशाना साध कर बन्दूक छोड़ दी ।

मशाल अब बुझ गई थी और शेर झपटाही चाहता था, कि एक तड़ाके की आवाज़ आई और शेर ऊपर उछला, और फिर पृथ्वी पर गिर कर तड़पने लगा । हेक्टर भी इसी गड़बड़ मे भूमि पर गिर पड़ा, परन्तु मारे भय के तुरन्त लुढ़क कर उस स्थान से तनिक दूर हट गया । उस्के दिल मे हर घड़ी हौल उठता था, कि शेर अब उस्के ऊपर आया, और अब आया ! परन्तु नहीं, वह एक कोने में पड़ा तड़प रहा था । इतने में सहसा

एक भारी चीख और फिर एक धमाका सुन पड़ा, और उस्के उपरान्त मौत का सा सन्नाटा चारों ओर फैल गया।

अब हेक्टर को केवल अपनी ही साँस चलती हुई सुन पड़ती थी, और कहीं से कोई शब्द या खटका न सुन पड़ताथा। उसे निश्चय था, कि धड़ाके की आवाज़ शेर के खाई में गिरने की थी। शायद वह तड़पता हुवा उस्में जा गिरा हो। इस्पर वह धीरे से उठा और चारों ओर आँखें फाड़ २ कर देखने लगा, परन्तु कुछ भी न दिखाई पड़ता था, अन्त वह रह न सका, और पुकार उठा टौंक! सर विल्फ्रेड! आप कहा हैं? । परन्तु इस्पर भी कोई उत्तर न मिला, उसने फिर जोर से आवाज़ लगाई; परन्तु बेकार! अब हेक्टर के बदन मे कँपकँपी आ गई! इस्की बुद्धि ने जवाब दे दिया, और वह बदहवासी के साथ वहीं चित्रपट की भांति खड़ा रह गया।

कुछ देर उपरान्त इसने अपने पीछे से कुछ शब्द सुने, और साथही प्रकाश भी जान पड़ने लगा। यह देख कर उसने अनुमान किया, कि कोई नई आफत आती है, परन्तु नहीं, कुछही देर के उपरान्त उसे अपने पहिले अनुमान पर लज्जित होना पड़ा। यह आनेवाले सब उस्के बाकी के साथी थे, अपने २ हथियार और बलती हुई लकड़ियां हाथों मे लिये सब बढ़े आते थे।

कप्तान जोली सबके आगे थे, और उन्हों ने जैसेही शेर को; जो बेजान आगे पड़ा हुआ था, देखा, चौंक कर पीछे हटे!

और बीरबर चेकों तो उसे देखतेही वहीं गिर पड़ा; परन्तु कुछही देर के उपरान्त उन्हे मालूम हो गया कि यह सर्द है। यह जान सब आश्चर्य से उस्के गोली के घाव को देखने लगे। फिर उनकी दृष्टि हेक्टर पर पड़ी, जो आँखें मींच दीवार से लगा खड़ा था। कप्तान जोली उस्के पास गये और बाँह हिलाकर चिल्ला उठे! "सर विल्फ्रेड कहां हैं? यह बात क्या है?"

इन लोगों ने अभी तक, उस खाई को नहीं देखा था। इसलिये हेक्टर ने चेको के हाथ से मशाल ली और उस खाई पर झुक गया।

जो उसने सोचा था अभाग्यवश वही ठीक भी हुवा! सर विल्फ्रेड ने टोंक की सहायता करने में अपनी भी जान गँवा दी!!! शोक!! महा शोक!! उस समय हेक्टर के चित्त पर जो कुछ बीतती थी वह उस्के हृदयही को कुछ खूब मालूम होगा! उस्के चित्त पर यहां लों ठेस पहुँची कि वह बेहोश होकर एक ओर गिर पड़ा। इस्पर कप्तान जोली भी रोने लगे, यद्यपि उनकी समझ मे असल बात तो न आई थी परन्तु कुछ २ वे अवश्यही समझ गये।

कुछ देर के उपरान्त हेक्टर ने नेत्र खोले। उस्के नेत्रों से अश्रु धारा लुढ़कती चली आती थी, और उसने रोते २ अपना कुल वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुनतेही कप्तान साहब की बुरी गति हो गई। वे पछाड़ें खाने लगे और बहुत ही रोये पीटे, अन्त वह अपनी जान बिलकुल आपत्ति मे डाल कर उस खाई

मे मशाल हाथ मे लेकर कमर तक झुक गये, और बड़ी ज़ोर से सर विल्फ्रेड का नाम लेलेकर पुकारने लगे । परन्तु कोई फल न हुआ ! यहां तक कि उनकी आवाज़ बैठ गई । अन्त उनके साथियों ने बहुत कुछ समझाया बुझाया, और सर विल्फ्रेड का सच्चा मित्र, कप्तान जोली—रोता और हिचकियाँ लेता हुआ वहाँ से हटकर अपने स्थान पर आ बैठा ।

हेक्टर—क्या अब उनके जीवित मिलने की कोई आशा नहीं है ?

फिलिप—प्रातः काल पर्यंत तो तुम कुछ नहीं कर सक्ते !

हेक्टर—प्रातः काल को भी तुम क्या कर लोगे, सिवा इस्के कि उनके मुर्दे मिलें और क्या हो सक्ता है और मुझे तो इस्में भी सन्देह है ।

कप्तान जोली और हेक्टर को जो दुखः था वह हमारी लेखनी से लिखा नहीं जा सक्ता,—और हेक्टर तो भला, कुछ दूरदर्शिता के कारण इससमय अपना दुखः प्रगट नहीं होने देता था, परन्तु कप्तान साहब का तो यह हाल था, कि वे मानतेही न थे । वह तो उस खाई में अपने मित्र को ढूँढ़ने के निमित्त उतरने को थे परन्तु सबने घसीट कर उन्हें अलग बैठा दिया ।

कप्तान—हाय ! क्या मेरा मित्र मर गया ? उफ ! ऐसी मृत्यु ? नहीं नहीं ! भला यह भी कभी सम्भव है ! वह मरही नहीं सक्ता । मुझे विश्वास नहीं होता ! हाय ! वह कैसा बुद्धिमान, दयाशील, उच्चकुल का भूषण और वीर पुरुष था ।

हेक्टर—आह ! मुझे यह सब अच्छी तरह मालूम है कि वे कैसे थे, उनकी बहादुरी कोई मेरे हृदय से पूछे ! और सच तो यों है कि इन थोड़े दिनों में, मैं सर विल्फ्रेड पर आशक्त हो गया था। अपने पिता से भी कुछ विशेष उनपर मेरा प्रेम था।

कप्तान—हेक्टर ! तुम भी दुखी हो ! बेशक दुखी हो ! और हमारे इस अपार दुःख के तुम साथी हो। हाय हेक्टर! मैं अपना हृदय किसे चीर कर दिखाऊँ कि कितना दुःख मुझे हुआ है।

यह कहकर रोते २ कप्तान साहब ने हेक्टर का हाथ अपने हाथ में ले लिया। उधर चेको एक ओर अँधेरे में बैठा हुआ अपने बाल नोच रहा था उस्की आँखों से भी बराबर अश्रुधारा निकल रही थी।

इस्के उपरान्त ये लोग, अपने पड़ाव की ओर फिरे, लेकिन फिरती समय सहसा हेक्टर की दृष्टि फिलिप पर पड़ी जो शेर के निकट की पड़ी हुई किसी बस्तु को उठा रहा था। उसी समय हेक्टर का ध्यान अपने जन्तर पर पड़ा कि जिसे वह प्राण स भी कुछ विशेष प्रिय रखता था। यह ध्यान आतेही तुरन्त उसने अपने गले में हाथ डाल कर टटोला तो जन्तर वहाँ न पाया, यह देखतेही वह झपट कर आगे बढ़ा और कहने लगा "ऐं ! मेरा जन्त्र ! फिलिप! तुमने कहीं मेरा जन्तर तो नहीं देखा है ?

फिलिप—तुम्हारा यन्त्र ! इस "तुम्हारा" का मतलब, कदाच् सर विल्फ्रेड से है।

हेक्टर—नहीं २ वह तो मेरा यन्त्र है, मैं बहुत दिनों से इसे पहिने हुआ हूं इस्में जो तस्वीर है वह मेरी माता—"

फिलिप—ऐं ! तुम्हारी माता की वह तस्वीर है ?

हेक्टर—हाँ हाँ ! मेरी प्यारी माता का वह चित्र है ! वह देखो उस्का तागा; अबतक मेरी गरदन में मौजूद है।

फिलिप ने वह यन्त्र हेक्टर के हवाले कर दिया परन्तु देती समय उस्का हाथ काँप रहा था और उस्का रंग बिलकुल पीला पड़ गया था। इस्के उपरान्त सब कोई पड़ाव पर पहुँचे और वहाँ पहुँचकर हेक्टर ने सबको आराम करने की सलाह दी ! परन्तु सिवा चेको के ऐसी अच्छी बात किसी ने न मानी ! और रात भर सब सर विल्फ्रेड के दुःख से जागते रहे।

जैसेही सबेरा हुआ अर्थात् जब गुफा के बाहर एक पहर दिन चढ़ गया तो वह सब फिर उस खाई पर आये। कप्तान साहब ने दो चीखें खूब कसके उस मुर्दा शेर बबर पर लगाईं जो इनकी बरबादी का कारण हुआ था। अब हेक्टर ने जो झुक कर भली भाँति उस खाई के भीतर देखा तो जान पड़ा कि चालीस या पचास फीट के नीचे एक पानी का सोता बड़ेही बेग से बह रहा है। जिस्की परीक्षा उसने एक लकड़ी डालकर कर ली, जो गिरतेही आँखों से छिप गई।

हेक्टर—उनका यहाँ पता कहाँ ? या तो वे गिरतेही डूब गये होंगे या बह गये हों । परन्तु उनकी लाश का अवश्यही पता लगाना होगा ।

इस्के उपरान्त खाई के उस पार जाने का बिचार होने लगा। इधर उधर घूमकर देखने के उपरान्त जान पड़ा कि एक पुल बायें कोने पर बना है। यह पुल काहे का था ? तनिक वह भी सुन लीजिये। किसी लता के चार बड़े और मोटे २ रस्से इकट्ठा किये गये थे, ये रस्से लम्बाई में लगभग दस फीट के होंगे और इसी को खाई का पुल बनाके दोनों कोनों पर दो बड़े २ पत्थर के टुकड़ों से दबा दिया था । इनलोगों को सब से ज्यादा ताज्जुब उन पत्थर के टुकड़ों पर हुवा कि वे यहाँ कैसे आये।

हेक्टर—निस्सन्देह यह देवों का काम है !

कप्तान—(काँप कर) और जो उनके बराबर के हैं वेही उन्हें परास्त भी कर सक्ते हैं।

हेक्टर—अच्छा ! अब हमें क्या करना चाहिये । यह सोता या नदी, पूर्व दिशा की ओर बहती है और यह गुफा भी उसी ओर घूमती हुई जा रही है । हमारी जान इस गुफा का मोहरा और यह सोता कहीं पासही पास निकलता है और सम्भव है कि हमें टौंक तथा सर विल्फ्रेड के मुर्दे भी वहीं कहीं मिल जावें, और दूसरे; (हिचकिचाकर) जो काम सर विल्फ्रेड ने

प्रारम्भ किया था उसे भी मैं पूरा करूंगा; अपने पिता की मैं अवश्य खोज करूंगा।

यह कहकर हेक्टर अपने साथियों की ओर देखने लगा।

कप्तान—हेक्टर निश्चिन्त रहो! मैं भी अपने मित्र सर विल्फ्रेड का इच्छा को, जो उसे यहाँ तक खींच लाई थी पूरा करूंगा। और जहाँ तुम्हारा पसीना बहेगा वहाँ अपना खून टपकाऊंगा। मेरी हड्डियाँही गलें जो मैं अपनी बात से फिरूं! और मैं आशा करता हूं कि फिलिप की भी यही राय है।

फिलिप—(सिर हिलाकर) भई मेरी तो यह राय है कि अब पीछे फिर चलो। सर विल्फ्रेड के विना हमलोगों से कुछ करते धरते न बन पड़ेगा। और—"

कप्तान—(क्रोध से) लड़के! यह चालाकियां कहीं और दिखाना मुझ बुढ्ढे खरींट पर, जिसने बहुत से समुन्दरों का जल पिया है तेरी एक भी चाल काम न करेगी। जो कुछ तुम्हारे दिल में है उसे मैं अच्छी तरह समझता हूं। तुम्हारी यह इच्छा है कि अब मैं सभ्य-संसार में जाकर सर विल्फ्रेड की असंख्य सम्पत्ति से खूब मज़े उड़ाऊं, क्योंकि अब उनके वली वारस जो हो एक तुम्ही हो। लेकिन सोचने की बात है कि क्या ऐस मनुष्य के मिट्टी की खोज, जिस्के अतुल सम्पत्ति से तुम ऐश्वर्य भोग करोगे न करनी चाहिये?

फिलिप—(लाल होकर) यदि तुम्हें उनके मुरदे के मिलने की आशा है तो मैं तुम्हारे साथ हूं।